भारतीय ज्ञान-दर्शन परंपरा और गुरु नानक देव

प्रो. पूरन चंद टंडन

गुरु नानक देव जी के लिए समाज में कोई छोटा-बड़ा नहीं था। वह भावपूर्ण संवाद के माध्यम से जनमानस के मध्य सौहार्द व्याप्त करने में विश्वास रखते थे। यही कारण है कि उन्होंने समाज के खांचों को तोड़कर मानव को एक स्तर पर लाने का प्रयत्न किया। सभ्यताओं के सिद्धांत की परिधि में जो बातें होती हैं; कहा जा सकता है कि उसमें सबसे ज्यादा प्रखरता के साथ संवाद गुरु नानक देव जी ने ही किया। चाहे कावा में घटित प्रसंग हो, जहाँ काबा की ओर पैर करके सोने पर उन्हें टोका गया कि आखिर वे अल्लाह की ओर पैर करके कैसे सो सकते हैं? इस पर नानकदेव का उस व्यक्ति से अनुरोध करना कि उनके पैर वह उधर कर दे जिधर अल्लाह न हो और फिर उस व्यक्ति का नानक के पैर को घुमाना और हर दिशा में काबा का दिखना, अपने आप में अत्यंत गूढ़ दर्शन को सहज तरीके से समझाने की विधा थी। गुरु नानक देव जी ने कीरत करो, नाम जपो और वंड छको के माध्यम से सामाजिक सामंजस्य की नींव रखी। जिस समय गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ, उस समय देश-समाज की स्थितियाँ बहुत खराब थीं। समाज जात-पात, ऊँच-नीच सहित अनेक भेदभाव में बंटा पड़ा था। लेकिन गुरु नानक देव जी ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से लोगों को इस स्थिति से उबारा। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने प्रारंभिक काल में ही सामाजिक बुराइयों पर चोट करना शुरू कर दिया था। उन्होंने स्त्रियों को सम्मान देते हुए स्त्री का पुरुष के जीवन में कितना महत्त्व है, उसे बताया। उन्होंने बताया कि पुरुष का जन्म स्त्री से ही होता है। वह उसी से शादी, उसी से दोस्ती कर, सारा जीवन व्यतीत करता है। ऐसे में जो पुरुष स्त्री के बिना एक पल नहीं रह सकता, अगर वह अच्छा है तो स्त्री कैसे बुरी हो सकती है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि स्त्री एक राजा से लेकर एक सामान्य व्यक्ति को जन्म देती है। अतः उसकी कभी निंदा नहीं करनी चाहिए-

भंडि जंमीऐ भडि निमीऐ भंडि मंगण वीआहु ।।

भंडहु होवै दोस्ती भंडहु चलै राहु ।।

भंडु मुआ भंडु भालीऐ भोंड होवै बंधानु ।।

सो किए मंदा आखीऐ जिते जंमहि राजान ।।

स्त्री स्वयं स्त्री की भी जननी है। स्त्री के बिना उत्पत्ति असंभव है। वह कहते हैं परमपिता भी स्त्री के बिना अवतरित नहीं हो सकता है-

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ।।

नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ।।

गुरु नानक देव जी की सीख के अनुसार मनुष्य को जन्म के आधार पर नहीं उसके कर्म के आधार पर परखना चाहिए। मनुष्य जैसे कर्म करता है, उसे उस आधार पर ही देखना चाहिए। चाहें उसका जन्म किसी भी कुल में क्यों न हुआ हो। उसके कर्म के आधार पर उसका मूल्यांकन होना चाहिए-

जाति जनमु नह पूछीयै सच कर लेहु बताइ।

सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ।।

वंचित समाज के प्रति श्री गुरु नानक देव की पीड़ा उनकी बाणी में स्पष्ट झलकती है। वे कहते हैं कि परमपिता की कृपा वहीं बरसती है, जहाँ गरीबों की सेवा होती है। इसलिए मैं अमीरों की बराबरी की संगत करना चाहता हूँ। वह कहते हैं कि सब की जन्म प्रक्रिया एक ही है। तीनों लोकों में एक ही परमात्मा का नूर व्याप्त है, जिससे सबका जीवन चलता है। ऐसे में अगर हम सब को ऊँचा देखेंगे तो हमें कोई भी नीचा दिखाई नहीं देगा। श्री गुरु नानक देव जी का जीवन स्वयं प्रेरणा का सार प्रस्तुत करता है। उन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन में चार यात्राएँ कीं, जो उदासी के नाम से जानी जाती हैं। इस दौरान उन्होंने अपने जीवन में 45,000 किलोमीटर की यात्रा की और उस समय के मत-संप्रदाय के प्रमुखों, सूफी फकीरों आदि से भेंट की। उन्होंने आक्रांताओं के दमन और सामाजिक भेदभाव के कारण आत्मसम्मान खो चुके भारतीय समाज को जाग्रत किया। साथ ही भारत के धर्म और संस्कृति को नष्ट करने वाले आक्रांता बाचर को 'यमदूत' की संज्ञा दी तथा परमात्मा को भी उलाहना दिया। गुरु नानक देव जी के दिव्य व्यक्तित्व के प्रभाव स्वरूप गुवाहाटी की कुख्यात जादूगरनी नूर शाह भी नतमस्तक हुई और भाई मरदाना को अपने जादू से आजाद कर दिया। भगवान की पूजा तो स्वतः प्रकृति निरंतर कर रही है। यह बात उन्होंने इस शबद से समझायी-

गगन मैं थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती।

धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती।। शिक्षा अपने अज्ञान की विकसनशील अमूर्त खोज है और भारतीय दर्शन में इसे बखूबी व्यंजनात्मक आश्रय प्राप्त हुआ है।

यह एक प्रमुख कारण भी रहा है कि भारतीय दार्शनिक परंपरा (Indian Philosophical Tradition) में प्रत्येक धर्म एवं सम्प्रदाय (Religion and Sects) ने धार्मिक दर्शन को आधार बनाकर मूलतः विभिन्न शिक्षाओं का ही प्रचार-प्रसार करने का कार्य किया- "दर्शनाम् मूलः शिक्षादर्शनम्।"

ग्रीक दार्शनिक प्लेटो अपनी पुस्तक "रिपब्लिक" (Republic) में यह तक लिखते हैं-

"जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई-नई बातों को जानने के लिए रूचि प्रकट करता है तथा जो कभी संतुष्ट नहीं होता, उसे दार्शनिक कहा जाता है।"

अतः भारतीय दर्शन परंपरा में जिन लीजेंड्स (दिव्य-पुरुषों) का नाम स्वर्णाक्षरों से लिखा गया। उनमें भी गुरु नानक देव सिरमौर संत हैं।

सिक्ख परंपरा के वाहक श्री गुरु नानक देव (जन्म संवत् 1526 विक्रमी/1469 ई.) निर्गुण संत परंपरा के अग्रज के बतौर 'एक ऑकार' का महात्मय बताते हैं-

एक ओंकार सतनाम, करतापुरख, निरभऊ, निर्वैर अकाल मूरति, अजूनी सैभं, गुरु प्रसादि..।। जप।।

आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच ।।

इसी प्रकार, "आदर्श पुरुष" की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहते हैं-

"ऐसे जन विरले जग अंदरि, परखि खजाने पाइआ।

जाति वरन ते भए अतीता, ममता लोभ चुकाइआ।

नामि रते तीरथ से निरमल, दुखु हउमै मैलु चुकाइआ।

नानकु तिंन के रन पखालै, जिन गुरमुखि साचा भाइया।।"

गुरु नानक देव जी ब्रह्म की शाश्वता के विषय में एक-सीधे सच्चे मार्ग के समर्थक थे-

"अकासी पाताली तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ।

तू जल थलि महीअलि भरिपूरि लीणाँ तू आपे सरब समाणां ।।"

गुरु का महात्मय बतलाते हुए, उसके 'ज्ञान' से 'द्वन्द्व-नाश' की प्राप्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं-

"सतगुरु मिलै त दुविधा भागै,

कमल विगासी मनु हरि प्रभ लागै।

जीवतु मरै महा रसु आगै।

गुरि मिलिए मिली अंक समाइया।

करि किरपा धरू महलु दिखाइआ।।"

- (नानक बाणी, गउड़ी सबद-9)

मृत्य को अटल सत्य बताकर श्री गुरु नानक देव जी 'मोह-त्याग' तथा 'जीवन की नश्वरता' का बोध कराते नजर आते हैं-

"खेलु खेह रलाईए ता जीउ केहा होई.

जलिआ सभी सिआणपा उठि चलिआ रोई.।"

लोकमंगल साधना के संदर्भ में आदि गुरु श्री नानक देव जी परमात्मा के नैकट्य का मार्ग प्रशस्त करते दिखते हैं-

"सचु करणि अभ अंतरि सेवा।

मनु तृपतासि अलख अभेदा।।"-

(नानक बाणी, पृ. 111)

ज्ञान-भक्ति तथा कर्म की त्रिवेणी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा 'मैं' रूपी "ठग" के त्याग के साथ "मानव-सेवा" का वैश्विक सूत्र प्रदेय स्वरूप प्रस्तावित किया गया-

"अपने ही सुख सों सब लागे,

क्या दारा क्या मीत।

मेरो मेरो सभी कहत हैं,

हित सों बाध्यों चीत।

अंतकाल संगी नहिं कोऊ,

भह अचरज की रीत।।"

अतः वह इस दिशा में "नाम सुमिरन" की श्रेष्ठता सिद्ध करते हुए कहते हैं-

"जिनी नामु धिआइआ, गए मसकति धालि।

नानक ते मुख उजले. केती छुटी नालि।।"

- (जपुजी)

मध्यकालीन भक्ति युग में जब मानव आक्रमणों से बेहद त्रस्त तथा अपने जीवन मूल्यों के प्रति शंका भाव से भर चुका था। ऐसे में मानवतावाद के पोषक श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य के सात्विक जीवन हेतु प्रेमभक्ति का उपदेश देते हैं-

"भाऊ भगति करि नीचु सदाए।

तऊ नानक मोखतरू पाए।"-

(आसा. म. 1)

अस्तुः सद्गुरु श्री गुरु नानक देव जी संपूर्ण भारतीय संत परंपरा में इस दृष्टि से भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं चूंकि वह अत्यंत विषम मध्ययुगीन दौर में "दार्शनिकता" तथा "शिक्षा-प्रेषण" के धरातल

पर "व्यावहारिक ज्ञान" का अमृत छिड़ककर अखिल विश्व जगत को एकता के सूत्र में पिरोने का श्रेष्ठतम् 'पुरुषार्थ' करते नजर आते हैं-

"पवणु गुरु, पाणी पिता, माता धरि महतु।

दिवसु राति दुइ दाई दाइआ, खेलै सगल जगतु।।"

वर्तमान-जगत में शिक्षा एवं दर्शन की ऐसी प्रासंगिकता अन्यत्र दुर्लभ है। ...